"जनपद पीलीभीत में परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों मे हिन्दी भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों एवं कारणों का तुलनात्मक अध्ययन"

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर - पीलीभीत

शोधार्थी

मंजू लता

प्रवक्ता उर्दू

प्रवक्ता डाइट बीसलपुर

सारांश

एक प्रगतिशील समाज की सबसे पहली और बुनियादी आवश्यकता है "शिक्षा"।आदिकाल से ही हमारे देश में शिक्षा का विशेष महत्व रहा है और शिक्षा प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों को विद्यालय जाना होता है।

समाज के बदलते स्वरूप के अनुसार विद्यालय की शिक्षा भी परिवेश के अनुसार संचालित हो रही है।

शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास करते हुए इनकी योग्यताओ रुचियों और क्षमताओं को एक नई दिशा की ओर अग्रेषित करती है।

प्रस्तुत शोध में परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालयों के कक्षा-8 के विद्यार्थियों मे हिन्दी भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों एवं कारणों का तुलनात्मक अध्ययन" सम्बन्धी शैक्षिक उपलब्धि की तुलना जानने हेतु शोध कार्य को कक्षा-8 के 300 विद्यार्थियों पर किया गया है।

तुलना करने पर कई बिन्दुओ का विश्लेषण किया गया तथा शोध प्रक्रिया में वर्णनात्मक विधि भी सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधार्थी ने जनपद पीलीभीत के 8 विकास खण्डो से यादृच्छिक गुच्छ न्यादर्श विधि से परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालयों में से स्तरीकृत सम्भाव्य न्यादर्श विधि द्वारा 150-150 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श विधि का चयन किया गया, शोधार्थी ने प्रश्नावली का प्रयोग भाषा सम्बन्धी शैक्षिक उपलब्धि जानने हेतु किया।

प्रस्तावना :-

हिन्दी भाषा, भारत की एक प्रमुख राजभाषा और सांस्कृतिक धरोहर है जो सदियों से विकसित हुई है और विभिन्न भाषाओं के प्रभाव को आत्मसात करती है। यह न केवल विचारो के आदान-प्रदान का माध्यम है बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुभवो का वाहक भी है। हिन्दी का भविष्य इसकी बढ़ती प्रयोजनीयता, तकनीकि प्रगति के साथ एकीकरण और विभिन्न क्षेत्रों में इसके विस्तार पर निर्भर करता है।

कोई भी मनुष्य दूसरों के ज्ञान को दो तरह से ग्रहण करता है पढ़कर और सुनकर प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य लिखते व बोलते समय कई अशुद्धियाँ करते हैं। जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

भाषा सीखने का स्वर्णिम काल उच्च प्राथमिक स्तर को माना गया है। उच्च प्राथमिक स्तर पर वर्तनी गत या भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों को उचित कारण जानकर यदि किसी शब्द के रूप को बालको के स्मृति पटल पर ठीक से अंकित कर दिया जाए तो वे अक्षर विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियाँ नहीं करेंगे।

शुद्ध अक्षर संज्ञा सर्वनाम भाषा व्याकरण की समझ व्यक्ति की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाती है अतएव भाषा शिक्षक को चाहिए कि वह बालको की अशुद्धियों का निराकरण करके उनकी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने का प्रयास करें।

शोध के उद्देश्य :-

परिकल्पना-

परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा-8 के विद्यार्थीयो भाषा संबंधित अशुध्दियों एवं कारणों की उपलब्धि मे सार्थक अन्तर नही है।

शोध सीमांकन-

- प्रस्तुत शोध कार्य पीलीभीत जिले के विकास खण्डों में संचावित परिषदीया उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य पीलीभीत जिले के निजी विद्यालयों मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य केवल कक्षा-8 में पढ़ने वाले विद्यार्थीयो तक ही सीमित है।

शोध प्रक्रिया :-

शोध विधि-

इस अध्ययन में वर्णनात्मक विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यायदर्शन, चयन विधि-

प्रस्तुत अध्ययन से जिला पीलीभीत के 08 विकास खण्डों में यादृच्छिक गुच्छ संभावित प्रतिचयन विधि से किया गया। तत्तपश्चात इन्हीं विकास क्षेत्रों के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा निजी विद्यालयों का चयन स्तरीकृत संभावित विधि द्वारा किया गया, इन्ही विद्यालयों में से 300 विद्यार्थियो का चयन क्रमबद्ध प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण :-

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी-टेस्ट भी गणना की गई।

परिकल्पना :-

परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में व्याकरण एवं वर्तनी भी शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या :-

क्र.स.	विद्यालय	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t - मान	परिणाम
1.	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय	150	19.33	3.01	0.33	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2.	निजी विद्यालय	150	18.33			

उपरोक्त तामिका में दर्शाये गये विवरणानुसार सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालय दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 19.33 एवं 18.33 पाया गया। तथा दोनो समूह का सांख्यिकी गणनानुसार मानक विचलन 3.01 पाया गया एवं t-मान 0.33 पाया गया। चूंकि df (298) से सम्बन्धित 0.05 के सार्थकता स्तर पर अंकित मान (1.97) से प्राप्त t-मान 0.60 कम है।

इस प्रकार दोनो समूहों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना स्वीकृत भी जाती है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध हेतु संकलित आकड़ो के सांख्यिकी विश्लेषण में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये -

- हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तको मे समावेशित पाठो के प्रति दोनो स्तर के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण समान है।
- दोनो समूहों के विद्यार्थियों भी पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया है। अतः स्पष्ट है कि पढ़ने की आदत होने पर शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होना सम्भव है।

सुझाव :-

- विद्याधियों को पुस्तकालय में साहित्यिक पुस्तक, समाचार पत्र एवं व्याकरण भी पुस्तको को उपलब्ध कराते हेतु विद्यालय मे उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें।
- सहायक शिक्षण सामग्री का विद्यालय मे नियमित प्रयोग शिक्षक करें।
- कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के मध्य में शिक्षक शब्दों का उचित अर्थ में प्रयोग करें।
- विद्याथियो का शब्दकोष व समझ विकसित करने हेतु चर्चा परिचर्चा करें।

सन्दर्भ :-

- डा० पाण्डेय पृथ्वी नाथ वृहद सामान्य हिन्दी विद्या प्रकाशन मन्दिर लिमिटेड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
- डा० बाहरी हरदेव (2022) गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद, हिन्दी शब्द अर्थ प्रयोग अभिव्यक्ति प्रकाशन, बी-31
- डा० प्रसाद वासुदेवनन्दन (1959) पब्लिशर्स एण्ड डिस्टिब्यूटर्स, पटना, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना भारती

भवन

- डा० राकेश विष्णु दत्त (1991) आधुनिक हिन्दी लेखन की ऊर्जा पूर्वोदय प्रकाशन,
- द0 तण्डन पूर्णचंद (1999) वस्तुनिष्ठा हिन्दी,
- डा० शर्मा मुनीश हिन्दी विभाग दिल्ली
- शर्मा भक्त राम (1995) ग़ामताबाद और हिन्दी काव्य, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली
- लाल. पुरूषोत्तम (1992) हिंदी नृत्यांगना, जयपुरः राजस्थान हिंदी कोरियोग्राफी अकादमी
- लाल रमन विहारी, हिन्दी शिक्षण स्टार्टअपः स्टोगी प्रकाशन
- 510 जोशी राजीव - हिन्दी वर्मी की समस्या
- चौधरी नीतू - हिन्दी भाषा सम्वन्धी अशुद्धियाँ महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
-

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.